



# Hardik

29 Oct 2010

04:00 PM

Ludhiana

Model: Web-MyKundli

Order No: 121815901

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: पुल्लिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 29/10/2010  
दिन \_\_\_\_\_: शुक्रवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 16:00:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 23:21:52 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Ludhiana  
राज्य \_\_\_\_\_: Punjab  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 30:56:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 75:52:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:26:32 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 15:33:28 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: 00:16:18 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 18:04:04 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 06:39:15 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 17:41:05 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 11:01:50 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: दक्षिणायन  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: दक्षिण  
ऋतु \_\_\_\_\_: हेमन्त  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 11:52:57 तुला  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 07:29:18 मीन

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: मीन - गुरु  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: मिथुन - बुध  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: पुनर्वसु - 3  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: गुरु  
योग \_\_\_\_\_: सिद्ध  
करण \_\_\_\_\_: विष्टि  
गण \_\_\_\_\_: देव  
योनि \_\_\_\_\_: मार्जार  
नाड़ी \_\_\_\_\_: आद्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: शूद्र  
वश्य \_\_\_\_\_: मानव  
वर्ग \_\_\_\_\_: मेष  
युँजा \_\_\_\_\_: मध्य  
हंसक \_\_\_\_\_: वायु  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: हा-हरीश  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: लौह - रजत  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: वृश्चिक

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1932	कार्तिक	7
पंजाबी	संवत : 2067	कार्तिक	13
बंगाली	सन् : 1417	कार्तिक	12
तमिल	संवत : 2067	आइपसी	13
केरल	कोल्लम : 1186	तुलम	12
नेपाली	संवत : 2067	कार्तिक	13
चैत्रादि	संवत : 2067	कार्तिक	कृष्ण 6
कार्तिकादि	संवत : 2067	आश्विन	कृष्ण 6

### पंचांग

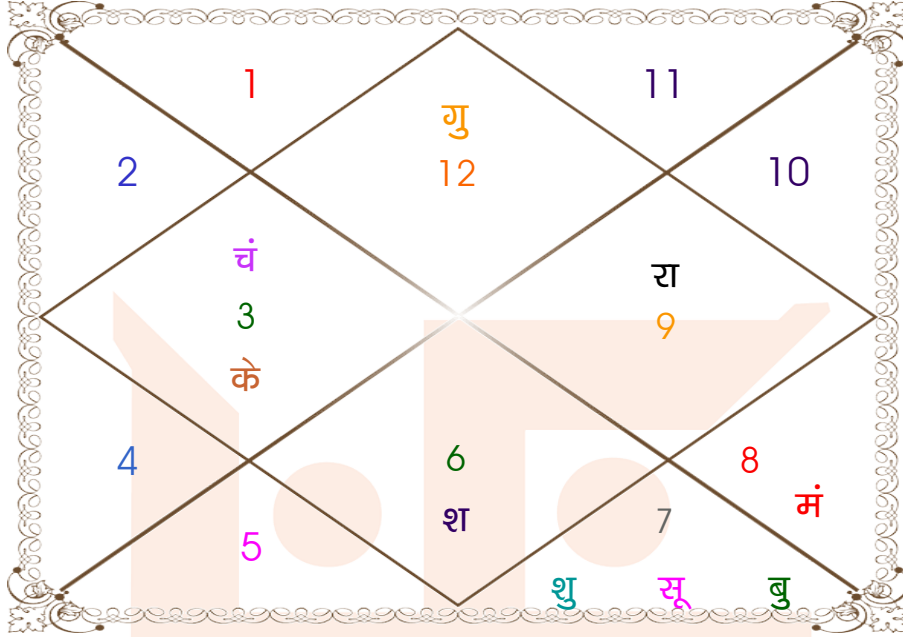
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 6  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 08:17:19  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 7  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : पुनर्वसु  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 25:30:24 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : पुनर्वसु  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : सिद्ध  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 16:19:19 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : सिद्ध  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : वणिज  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 08:17:19 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : विष्टि  
भयात \_\_\_\_\_ : 35:06:53  
भभोग \_\_\_\_\_ : 58:52:53  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : गुरु 6 वर्ष 5 मा 28 दि

### घात चक्र

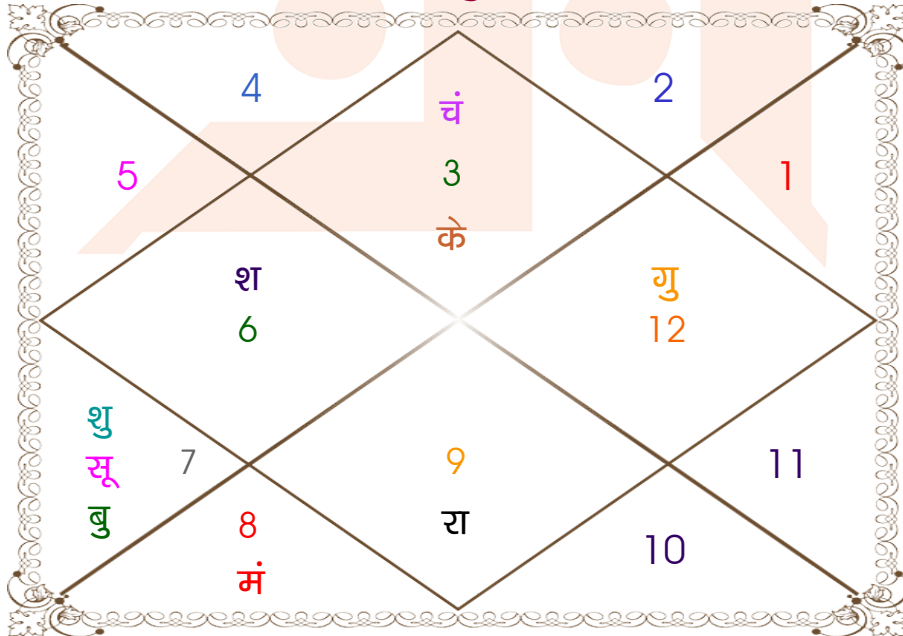
मास \_\_\_\_\_ : आषाढ़  
तिथि \_\_\_\_\_ : 2-7-12  
दिन \_\_\_\_\_ : सोमवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : स्वाति  
योग \_\_\_\_\_ : परिघ  
करण \_\_\_\_\_ : कौलव  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 3  
वर्ग \_\_\_\_\_ : श्वान  
लग्न \_\_\_\_\_ : कर्क  
सूर्य \_\_\_\_\_ : मीन  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
मंगल \_\_\_\_\_ : मेष  
बुध \_\_\_\_\_ : मकर  
गुरु \_\_\_\_\_ : वृष  
शुक्र \_\_\_\_\_ : मिथुन  
शनि \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
राहु \_\_\_\_\_ : कर्क

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



## लग्न कुण्डली और दशा

### लग्न कुंडली

गु ल			चं के
रा	मं	शु सू बु	श

### लग्न कुंडली

के चं		गु ल
श	बु सू शु	रा मं

विंशोत्तरी  
गुरु 6वर्ष 5मा 28दि  
गुरु  
29/10/2010  
28/04/2121

गुरु	27/04/2017
शनि	27/04/2036
बुध	27/04/2053
केतु	27/04/2060
शुक्र	27/04/2080
सूर्य	27/04/2086
चन्द्र	27/04/2096
मंगल	29/04/2103
राहु	28/04/2121

योगिनी  
पिंगला 0वर्ष 9मा 22दि  
उल्का  
22/08/2023  
21/08/2029

उल्का	21/08/2024
सिद्धा	21/10/2025
संकटा	20/02/2027
मंगला	22/04/2027
पिंगला	22/08/2027
धान्या	20/02/2028
भ्रामरी	21/10/2028
भद्रिका	21/08/2029

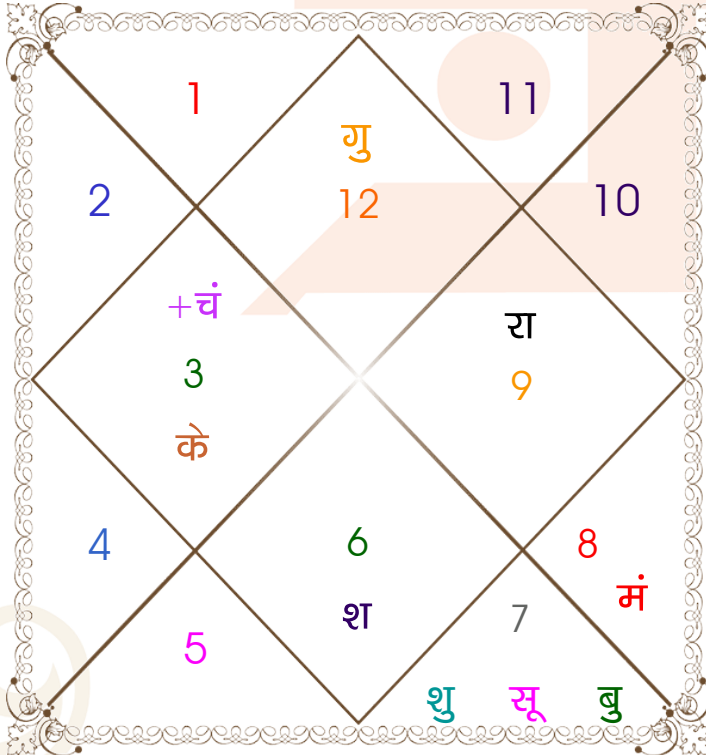
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मीन	07:29:18	531:23:51	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	केतु	---
सूर्य			तुला	11:52:57	00:59:55	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	नीच राशि
चंद्र			मिथु	27:55:17	13:36:37	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	शुक्र	मित्र राशि
मंगल			वृश्चि	06:48:54	00:43:03	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	बुध	स्वराशि
बुध	अ		तुला	19:46:42	01:34:30	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	मंगल	मित्र राशि
गुरु	व		मीन	00:10:54	00:04:04	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	चंद्र	स्वराशि
शुक्र	व	अ	तुला	11:15:25	00:36:38	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	मूलत्रिकोण
शनि			कन्या	17:10:03	00:06:58	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	शनि	मित्र राशि
राहु			धनु	10:25:39	00:00:56	मूल	4	19	गुरु	केतु	शनि	नीच राशि
केतु			मिथु	10:25:39	00:00:56	आर्द्रा	2	6	बुध	राहु	गुरु	नीच राशि
हर्ष	व		मीन	03:13:44	00:01:43	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	---
नेप	व		कुंभ	01:55:25	00:00:18	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	केतु	---
प्लूटो			धनु	09:18:02	00:01:21	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	---
दशम भाव			धनु	06:55:21	--	मूल	--	19	गुरु	केतु	राहु	--

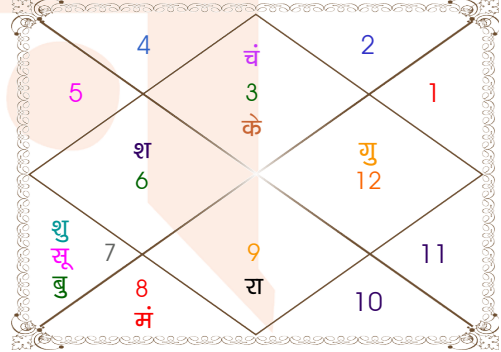
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:00:46

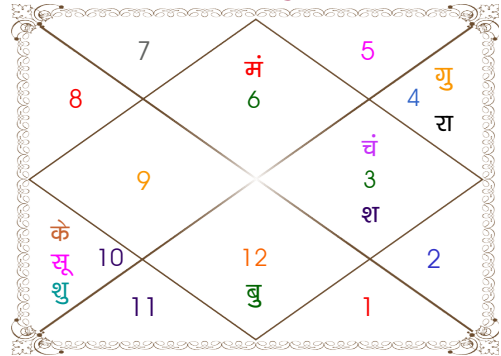
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कुम्भ 22:23:38	मीन 07:29:18
2	मीन 22:23:38	मेष 07:17:59
3	मेष 22:12:20	वृष 07:06:40
4	वृष 22:01:01	मिथुन 06:55:21
5	मिथुन 22:01:01	कर्क 07:06:40
6	कर्क 22:12:20	सिंह 07:17:59
7	सिंह 22:23:38	कन्या 07:29:18
8	कन्या 22:23:38	तुला 07:17:59
9	तुला 22:12:20	वृश्चिक 07:06:40
10	वृश्चिक 22:01:01	धनु 06:55:21
11	धनु 22:01:01	मकर 07:06:40
12	मकर 22:12:20	कुम्भ 07:17:59

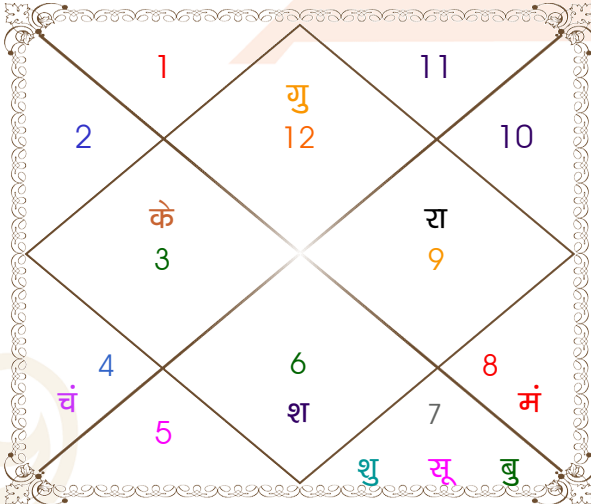
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मीन	07:29:18
2	मेष	15:24:17
3	वृष	13:22:23
4	मिथुन	06:55:21
5	कर्क	00:36:19
6	कर्क	29:00:07
7	कन्या	07:29:18
8	तुला	15:24:17
9	वृश्चिक	13:22:23
10	धनु	06:55:21
11	मकर	00:36:19
12	मकर	29:00:07

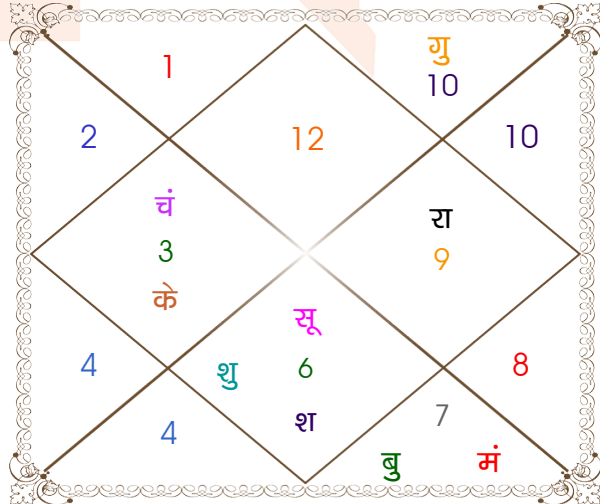
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 6 वर्ष 5 मास 28 दिन

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
29/10/2010	27/04/2017	27/04/2036	27/04/2053	27/04/2060
27/04/2017	27/04/2036	27/04/2053	27/04/2060	27/04/2080
00/00/0000	शनि 30/04/2020	बुध 24/09/2038	केतु 23/09/2053	शुक्र 27/08/2063
00/00/0000	बुध 08/01/2023	केतु 21/09/2039	शुक्र 23/11/2054	सूर्य 27/08/2064
00/00/0000	केतु 17/02/2024	शुक्र 22/07/2042	सूर्य 31/03/2055	चंद्र 27/04/2066
29/10/2010	शुक्र 19/04/2027	सूर्य 28/05/2043	चंद्र 30/10/2055	मंगल 28/06/2067
शुक्र 08/11/2011	सूर्य 31/03/2028	चंद्र 27/10/2044	मंगल 27/03/2056	राहु 27/06/2070
सूर्य 27/08/2012	चंद्र 30/10/2029	मंगल 24/10/2045	राहु 15/04/2057	गुरु 25/02/2073
चंद्र 27/12/2013	मंगल 09/12/2030	राहु 12/05/2048	गुरु 22/03/2058	शनि 27/04/2076
मंगल 03/12/2014	राहु 15/10/2033	गुरु 18/08/2050	शनि 01/05/2059	बुध 26/02/2079
राहु 27/04/2017	गुरु 27/04/2036	शनि 27/04/2053	बुध 27/04/2060	केतु 27/04/2080

सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष
27/04/2080	27/04/2086	27/04/2096	29/04/2103	28/04/2121
27/04/2086	27/04/2096	29/04/2103	28/04/2121	00/00/0000
सूर्य 14/08/2080	चंद्र 26/02/2087	मंगल 23/09/2096	राहु 09/01/2106	गुरु 16/06/2123
चंद्र 13/02/2081	मंगल 27/09/2087	राहु 12/10/2097	गुरु 03/06/2108	शनि 28/12/2125
मंगल 21/06/2081	राहु 28/03/2089	गुरु 17/09/2098	शनि 10/04/2111	बुध 04/04/2128
राहु 16/05/2082	गुरु 28/07/2090	शनि 27/10/2099	बुध 28/10/2113	केतु 10/03/2129
गुरु 04/03/2083	शनि 26/02/2092	बुध 25/10/2100	केतु 15/11/2114	शुक्र 30/10/2130
शनि 14/02/2084	बुध 27/07/2093	केतु 23/03/2101	शुक्र 15/11/2117	00/00/0000
बुध 20/12/2084	केतु 26/02/2094	शुक्र 23/05/2102	सूर्य 10/10/2118	00/00/0000
केतु 27/04/2085	शुक्र 27/10/2095	सूर्य 28/09/2102	चंद्र 10/04/2120	00/00/0000
शुक्र 27/04/2086	सूर्य 27/04/2096	चंद्र 29/04/2103	मंगल 28/04/2121	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 6 वर्ष 5 मा 15 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>शनि - शुक्र</b>	<b>शनि - सूर्य</b>	<b>शनि - चंद्र</b>	<b>शनि - मंगल</b>	<b>शनि - राहु</b>
<b>17/02/2024</b>	<b>19/04/2027</b>	<b>31/03/2028</b>	<b>30/10/2029</b>	<b>09/12/2030</b>
<b>19/04/2027</b>	<b>31/03/2028</b>	<b>30/10/2029</b>	<b>09/12/2030</b>	<b>15/10/2033</b>
शुक्र 28/08/2024	सूर्य 06/05/2027	चंद्र 18/05/2028	मंगल 22/11/2029	राहु 14/05/2031
सूर्य 25/10/2024	चंद्र 04/06/2027	मंगल 20/06/2028	राहु 22/01/2030	गुरु 30/09/2031
चंद्र 29/01/2025	मंगल 24/06/2027	राहु 15/09/2028	गुरु 17/03/2030	शनि 12/03/2032
मंगल 06/04/2025	राहु 15/08/2027	गुरु 01/12/2028	शनि 20/05/2030	बुध 07/08/2032
राहु 27/09/2025	गुरु 30/09/2027	शनि 03/03/2029	बुध 17/07/2030	केतु 07/10/2032
गुरु 28/02/2026	शनि 24/11/2027	बुध 24/05/2029	केतु 09/08/2030	शुक्र 29/03/2033
शनि 30/08/2026	बुध 12/01/2028	केतु 27/06/2029	शुक्र 16/10/2030	सूर्य 20/05/2033
बुध 10/02/2027	केतु 02/02/2028	शुक्र 01/10/2029	सूर्य 05/11/2030	चंद्र 15/08/2033
केतु 19/04/2027	शुक्र 31/03/2028	सूर्य 30/10/2029	चंद्र 09/12/2030	मंगल 15/10/2033
<b>शनि - गुरु</b>	<b>बुध - बुध</b>	<b>बुध - केतु</b>	<b>बुध - शुक्र</b>	<b>बुध - सूर्य</b>
<b>15/10/2033</b>	<b>27/04/2036</b>	<b>24/09/2038</b>	<b>21/09/2039</b>	<b>22/07/2042</b>
<b>27/04/2036</b>	<b>24/09/2038</b>	<b>21/09/2039</b>	<b>22/07/2042</b>	<b>28/05/2043</b>
गुरु 15/02/2034	बुध 30/08/2036	केतु 15/10/2038	शुक्र 11/03/2040	सूर्य 06/08/2042
शनि 11/07/2034	केतु 20/10/2036	शुक्र 14/12/2038	सूर्य 02/05/2040	चंद्र 01/09/2042
बुध 20/11/2034	शुक्र 15/03/2037	सूर्य 01/01/2039	चंद्र 27/07/2040	मंगल 19/09/2042
केतु 13/01/2035	सूर्य 28/04/2037	चंद्र 31/01/2039	मंगल 26/09/2040	राहु 05/11/2042
शुक्र 16/06/2035	चंद्र 11/07/2037	मंगल 21/02/2039	राहु 28/02/2041	गुरु 16/12/2042
सूर्य 01/08/2035	मंगल 31/08/2037	राहु 17/04/2039	गुरु 16/07/2041	शनि 03/02/2043
चंद्र 17/10/2035	राहु 10/01/2038	गुरु 04/06/2039	शनि 27/12/2041	बुध 19/03/2043
मंगल 10/12/2035	गुरु 07/05/2038	शनि 31/07/2039	बुध 22/05/2042	केतु 06/04/2043
राहु 27/04/2036	शनि 24/09/2038	बुध 21/09/2039	केतु 22/07/2042	शुक्र 28/05/2043
<b>बुध - चंद्र</b>	<b>बुध - मंगल</b>	<b>बुध - राहु</b>	<b>बुध - गुरु</b>	<b>बुध - शनि</b>
<b>28/05/2043</b>	<b>27/10/2044</b>	<b>24/10/2045</b>	<b>12/05/2048</b>	<b>18/08/2050</b>
<b>27/10/2044</b>	<b>24/10/2045</b>	<b>12/05/2048</b>	<b>18/08/2050</b>	<b>27/04/2053</b>
चंद्र 10/07/2043	मंगल 17/11/2044	राहु 12/03/2046	गुरु 31/08/2048	शनि 21/01/2051
मंगल 09/08/2043	राहु 10/01/2045	गुरु 15/07/2046	शनि 09/01/2049	बुध 09/06/2051
राहु 26/10/2043	गुरु 27/02/2045	शनि 09/12/2046	बुध 06/05/2049	केतु 05/08/2051
गुरु 03/01/2044	शनि 26/04/2045	बुध 20/04/2047	केतु 23/06/2049	शुक्र 16/01/2052
शनि 25/03/2044	बुध 16/06/2045	केतु 13/06/2047	शुक्र 08/11/2049	सूर्य 05/03/2052
बुध 06/06/2044	केतु 07/07/2045	शुक्र 16/11/2047	सूर्य 20/12/2049	चंद्र 26/05/2052
केतु 06/07/2044	शुक्र 05/09/2045	सूर्य 01/01/2048	चंद्र 27/02/2050	मंगल 23/07/2052
शुक्र 01/10/2044	सूर्य 24/09/2045	चंद्र 19/03/2048	मंगल 16/04/2050	राहु 17/12/2052
सूर्य 27/10/2044	चंद्र 24/10/2045	मंगल 12/05/2048	राहु 18/08/2050	गुरु 27/04/2053

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

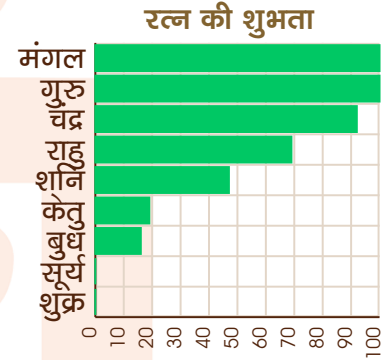
मूलांक	2
भाग्यांक	6
मित्र अंक	2, 7, 8, 6
शत्रु अंक	4, 5,
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	सोम, मंगल, गुरु
शुभ ग्रह	चन्द्र, मंगल, गुरु
मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
मित्र लग्न	मिथुन, वृश्चिक, मकर
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	100%	भाग्योदय, धन
पुखराज	गुरु	100%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति
मोती	चंद्र	92%	सुख, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	69%	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
नीलम	शनि	47%	दाम्पत्य कष्ट, हानि, व्यय
लहसुनिया	केतु	19%	ग्रह कलेश, दुर्घटना
पन्ना	बुध	16%	दुर्घटना, ग्रह कलेश, दाम्पत्य कष्ट
माणिक्य	सूर्य	0%	दुर्घटना, शत्रु व रोग
हीरा	शुक्र	0%	दुर्घटना, पराक्रम हानि



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	27/04/2017	0%	98%	100%	0%	100%	0%	47%	69%	19%
शनि	27/04/2036	0%	80%	95%	28%	100%	0%	61%	75%	0%
बुध	27/04/2053	0%	80%	100%	41%	100%	0%	47%	69%	19%
केतु	27/04/2060	0%	80%	100%	16%	100%	0%	22%	56%	44%
शुक्र	27/04/2080	0%	80%	100%	28%	100%	0%	55%	75%	31%
सूर्य	27/04/2086	0%	98%	100%	16%	100%	0%	22%	56%	0%
चंद्र	27/04/2096	0%	100%	100%	28%	100%	0%	47%	56%	0%
मंगल	29/04/2103	0%	98%	100%	0%	100%	0%	47%	56%	31%
राहु	28/04/2121	0%	80%	95%	16%	100%	0%	55%	81%	0%

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/10/2010-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----

### द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066

### तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	02/07/2093-18/08/2095	-----	-----

### शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	धनार्जन
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	पराक्रम
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	सम	सुख
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	सम	सन्तति कष्ट

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति नवम भाव में स्थित है। यह भाव भाग्य एवं धर्म का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप भाग्य पर अल्प मात्रा में ही विश्वास करेंगे तथा कर्म पर विशेष ध्यान देंगे। आपके विचार से कर्म के बिना भाग्य का उदय नहीं होता अतः अपने इस सिद्धांत से आप जीवन में कर्म के द्वारा उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों एवं तीर्थ स्थानों की यात्रा आदि को भी कम ही करेंगे। आयु के साथ साथ आप जीवन में इनके महत्व को भी अवश्य स्वीकार करेंगे। आपको समाज में विशिष्ट सम्मान भी प्राप्त होगा लेकिन इसमें विलम्ब हो सकता है। आप एक पराकमी एवं उत्साही व्यक्ति हैं अतः आपको इस ओर से कोई चिन्ता नहीं होगी।

नवम भाव से द्वादश भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक रहेगा साथ ही शुभाशुभ कार्यों पर आप व्यय करेंगे। जमीन जायदाद पर अधिक से अधिक व्यय करने के इच्छुक रहेंगे इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ की प्राप्ति हो सकती है। यद्यपि इसके प्रभाव से जीवन में अनावश्यक विघ्न बाधाएं भी आएंगी परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही दाम्पत्य जीवन का आप सुख पूर्वक उपभोग करेंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराकम में वृद्धि होगी तथा समाज में सभी लोग आपके पराकम से प्रभावित रहेंगे जिससे आपको इच्छित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही भाई बहनों का भी न्यूनाधिक सहयोग मिलता रहेगा। चतुर्थ भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से आप जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से युक्त रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य सांसारिक सुख संसाधनों की भी आपको परिश्रम पूर्वक प्राप्ति होगी परन्तु माता का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।

इस प्रकार मंगल के इस प्रभाव से आप कर्म योगी रहेंगे तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करके भाग्योदय करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जन भी आपसे सन्तुष्ट रहेंगे। आप भी उचित रूप से उनका लालन पालन करेंगे। साथ ही आपसी संबंधों में मधुरता भी बनी रहेगी।



## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

### काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में घातक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक जन्म से ही परिवार से पृथक रहता है। नाना-नानी, दादा-दादी का स्नेह आंशिक रूप में मिलता है। जातक को माता-पिता का विरह सहना पड़ता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय हो जाता है। जातक की सन्तान कभी-कभी अस्वस्थ हो जाती है और जातक को थोड़ा बहुत चिन्ता परेशानी घेर लेती है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। नौकरी-व्यवसाय में व्यवधान उपस्थित होता है पर कालान्तर में वह स्वतः समाप्त हो जाता है। कभी जातक को पदच्युत होने का भय भी होता है और व्यापार व्यवसाय में परिश्रम करने के बाद भी विशेष रूप से जमता नहीं या आंशिक नुकसान उठाना पड़ता है। भागीदारी में मनमुटाव की स्थिति पैदा हो जाती है एवं जातक को आंशिक रूप में क्लेश भोगना पड़ता है।

इस योग के कारण जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे सब षड्यन्त्र रचते रहते हैं पर वे लोग अपने षड्यन्त्र में सफल नहीं हो पाते। मित्रगण समय-समय पर धोखा दे जाते हैं। जिससे जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है और सरकारी पदाधिकारी से अनबन रहती है तथा राज्यपक्ष से भी क्षति प्राप्त होती है। जातक की स्थिति कभी राजा तो कभी रंक जैसा जीवन व्यतीत होता है।

इस योग के प्रभाव से जातक के शरीर में रोग व्याधि समय-समय पर घेर लेती है। कभी चोट लगने का भय भी होता है। जातक को सुख शान्ति के लिए संघर्ष करना पड़ता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है एवं उसमें प्रसिद्धि भी मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अष्टारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।

9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

#### विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- पंचम भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में चन्द्र और मंगल के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

### नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

## ग्रह फल

### सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

### चन्द्र

चतुर्थभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सुखी, मानी, दानी, उदार, रोगरहित, राजद्वेषवर्जित, कृषक, विवाह के पश्चात् भाग्योदयी, जलजीवी एवं बुद्धिमान होता है।

मिथुन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान, अध्ययनशील, सुन्दर, रतिकुशल, भोगी, मर्मज्ञ, नेत्र चिकित्सक, अच्छा वक्ता एवं अच्छा अन्तर्ज्ञान वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में होने से माता का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके प्रति उनका प्रगाढ़ स्नेह रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार की सुख सुविधाएं तथा अन्य सुखों को वे आपको प्रदान करेंगी। आपके मध्य मतभेद अल्प ही रहेंगे अतः परस्पर संबंध मधुर रहेंगे। साथ ही वाहनादि की प्राप्ति में भी वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी तथा कभी भी कोई कठिनाई का सामना नहीं करने देंगी।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा एवं निर्देशों को मानने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही अपने जीवन काल में उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे तथा आवश्यक सुखसुविधाओं को भी प्रदान करेंगे। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध मधुर एवं सुदृढ़ रहेंगे तथा जीवन को प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

## मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

## बुध

अष्टमभाव में बुध हो तो जातक दीर्घायु, अभिमानी, राजमान्य, कृषक, लब्धप्रतिष्ठ, मानसिक दुखी, कवि, वक्ता, न्यायाधीश, मनस्वी, धनवान् एवं धर्मात्मा होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

## गुरु

लग्न (प्रथम) में गुरु हो तो जातक विद्वान् दीर्घायु, ज्योतिषी कार्यपरायण, लोकसेवक, तेजस्वी, प्रतिष्ठित, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, सुखी, विनीत, पुत्रवान् धनवान्, राज्यमान, सुन्दर एवं धर्मात्मा होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

## शुक्र

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, क्रोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

तुला राशि में शुक्र हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

## शनि

सप्तम भाव में शनि हो तो जातक क्रोधी, कामी, विलासी, अविवाहित रहना या दुःखी विवाहित जीवन, धन सुखहीन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, स्त्रीभक्त एवं आलसी होता है।

कन्या राशि में शनि हो तो जातक मितभाषी, परोपकारी, लेखक, कवि, सम्पादक, धनवान्, बलवान्, निश्चित कार्य कर्ता, ईर्ष्यायलु स्वभाव, असभ्य, निर्बलस्वास्थ्य एवं पुराने विचारों वाला होता है।

## राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्ता एवं आलसी होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

## केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

## दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि  
( 27/04/2017 - 27/04/2036 )

शनि की महादशा की अवधि उन्नीस वर्ष की है। आपकी कुण्डली में यह 27/04/2017 को आरम्भ और 27/04/2036 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में शनि सप्तम भाव में स्थित है। यह स्वाभाविक रूप से एक अशुभ ग्रह है। यह फल की प्राप्ति में बाधा तथा विलम्ब कर जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है। यह परिश्रम के फल से वंचित नहीं करता, पर लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जातक को कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करता है। जन्म कुण्डली में सप्तम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि नवम, प्रथम तथा चतुर्थ भावों पर है जिससे उनके कार्य प्रभावित हो रहे हैं। सप्तम भाव कानूनी गठबंधन, दासता, जीवन ओर व्यापार के साझेदार, वाद-मुकदमा, विदेश में अर्जित प्रभाव व सम्मान का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

सप्तम भाव में स्थित महादशा स्वामी शनि की प्रथम भाव (9वें और 4थे भावों के साथ-साथ) पर दृष्टि है इसलिए आपको किसी बड़ी बीमारी या दुर्घटना की सम्भावना नहीं है, किन्तु आपका व्यक्तित्व आकर्षक होने के बावजूद आपको कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्या हो सकती है।

अर्थ और सम्पत्ति :

सप्तम भाव में स्थित शनि के कारण आपको कठिन परिश्रम करना पड़ सकता है और लक्ष्य की प्राप्ति में और अर्थ सम्पत्ति में वृद्धि के मार्ग में अनेक बाधाओं का सामना करना पर सकता है। इसके अष्टम भाव स्वामी होने के कारण भी आपकी आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव आएंगे। आपकी आर्थिक स्थिति परिवर्तनशील रहेगी।

व्यवसाय :

आप व्यवसाय में सुव्यवस्थित हो सकते हैं। आपके विदेश जाने और वहाँ बस जाने की सम्भावना भी है। आप दफ्तर के कार्य से भी विदेश जा सकते हैं जिससे आपके सम्मान में वृद्धि होगी। किन्तु, विदेश में आपके बीमार होने अथवा कुछ स्वास्थ्य समस्या से ग्रसित होने की सम्भावना है जिससे अन्ततः आपको देश वापस आना होगा।

पारिवारिक जीवन :

शनि के सप्तम भाव में स्थित होने के कारण आपका विवाह अच्छे कुल के धार्मिक तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति के साथ होगा। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होने के कारण विपरीत लिंग के लोग आपकी ओर आकृष्ट होंगे। आपके जीवन साथी के कारण आपके पारिवारिक जीवन में तनाव उत्पन्न हो सकता है।

**अंतर्दशा :- शनि - शुक्र  
( 17/02/2024 - 19/04/2027 )**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 27/04/2017 को प्रारंभ होकर 27/04/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 2 मास की होगी जो आपके लिए 17/02/2024 को प्रारंभ होकर 19/04/2027 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। शुक्र शुभ ग्रह है। अष्टम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको जीवन की सभी उत्तम वस्तुएं, सुख-साधन और मनोरंजन उपलब्ध होंगे। फिर भी, भावनात्मक स्थायित्व में कुछ कमी आ सकती है, मन विचलित हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के वैदिक मंत्र के 16000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- शनि - सूर्य  
( 19/04/2027 - 31/03/2028 )**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 27/04/2017 को प्रारंभ होकर 27/04/2036 को समाप्त होगी।

शनि महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 11 मास 12 दिन की होती है। आपके लिए यह 19/04/2027 को प्रारंभ होकर 31/03/2028 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। अष्टम भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के दूसरे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपका व्यक्तित्व आकर्षक बनेगा। वाणी में मधुरता होगी। कहीं-कहीं सम्मान में गिरावट आ सकती है। सट्टेबाजी आदि से अचानक धनलाभ हो सकता है। इस अंतर्दशा में कई अच्छी-बुरी घटनाएं अचानक घट सकती हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए

- शहद और दूध का सेवन करें; अग्नि को दूध अर्पित करें।
- गरीबों को आटा, गुड़, तांबा दान करें।

**अंतर्दशा :- शनि - चन्द्र  
( 31/03/2028 - 30/10/2029 )**

शनि महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास की होगी। आपके लिए यह 27/04/2017 को प्रारंभ होकर 27/04/2036 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर चंद्रमा आपकी कुंडली के 10वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में घरेलू सुख में कमी आ सकती है। माता से संबंध मधुर रहेंगे। अचल संपत्ति और वाहन प्राप्त कर सकते हैं, मगर हर काम में बाधाएं आएंगी। अंततः लक्ष्यप्राप्ति में सफल होंगे।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- शनि - मंगल  
( 30/10/2029 - 09/12/2030 )**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 27/04/2017 को प्रारंभ होकर 27/04/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास की होगी जो आपके लिए 30/10/2029 को प्रारंभ होकर 09/12/2030 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। नवम भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 12, 3, 4 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप अपने क्षेत्र में नेता या अग्रणी बन सकते हैं। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। क्रोध और अभिमान से बचें, अन्यथा भाई-बहनों और पिता से संबंध बिगड़ सकते हैं।

प्रसिद्ध होने के बावजूद पिता के आज्ञाकारी नहीं हो सकते हैं। इस कारण पिता को कष्ट हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रतिदिन ब्रह्माजी के गायत्री मंत्र के 108 जाप करें, हनुमान मंदिर में जाकर उपासना करें और हनुमान चालीसा का पाठ करें।

**अंतर्दशा :- शनि - राहु  
( 09/12/2030 - 15/10/2033 )**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 27/04/2017 को प्रारंभ होकर 27/04/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु की अंतर्दशा 2 वर्ष 10 मास की होगी जो आपके लिए 09/12/2030 को प्रारंभ होकर 15/10/2033 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है। दशम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धनी और सफल होंगे। विषय-वासना में अधिक रुचि हो सकती है। खूब यात्राएं कर सकते हैं, जिसके कारण भौतिकता में रुचि अधिक होगी।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।